प्रथम अध्याय

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

❊ प्रथम अध्याय ❊

''अब्दुल बिस्मिल्लाह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

1.1 व्यक्ति - परिचय -

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व - निर्माण में चारों ओर की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का सहयोग महत्त्वपूर्ण होता है। सामान्यत: व्यक्तित्व से अभिप्राय किसी व्यक्ति की उन सभी विशेषताओं से है, जो उसे अन्य व्यक्तियों से पृथक करती हैं। कन्हैयालाल नंदन के मतानुसार ''किसी भी रचनाकार की खास तौर पर बड़े रचनाकार की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है उसका व्यक्तित्व और कृतित्व हर किसी को अपने-अपने ढंग से ग्रहण करने के आयाम देता हैं।''[1] अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व ठीक इस प्रकार का रहा है। हर्षदेव लिखते हैं - ''कुछ व्यक्तियों का जीवन, जीवन नहीं होता बल्कि साक्षात आश्चर्य होता है। ऐसे व्यक्तित्व अपने जीवन काल में अपने कर्मों से हमें चमत्कृत किए रहते हैं।''[2] बिस्मिल्लाह जी का व्यक्तित्व भी पाठकों को आश्चर्यचकित एवं प्रभावित कर देनेवाला है। दूसरी बात यह कि रचनाकार के व्यक्तित्व के निर्माण में उसके जीवनानुभव भी आधारभूत रहते हैं। फलत: रचनाकार की रचनाओं को समझने के लिए उसका जीवन परिचय सहायक सिद्ध होता है। इसी उद्देश्य से बिस्मिल्लाह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत करना भी औचित्य पूर्ण लगता है। इसीलिए यहाँ इनका जीवन-परिचय संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है -

1.1.1 जन्म-तिथि तथा जन्म-स्थान :-

हिंदी के प्रगतिशील विचारधारा के सशक्त कवि, कथाकार एवं प्रबुद्ध चिंतक बिस्मिल्लाह जी का जन्म ''स्कूली दस्तावेज के अनुसार 5 जुलाई, 1949 को इलाहाबाद (उ.प्र.) के बलापुर नामक गाँव में हुआ।''[3] लेकिन ''पारिवारिक सूत्रों का कहना है कि इनका जन्म 3 अगस्त, 1950 में हुआ।''[4] मेरे अपने विचारों के अनुसार विभिन्न दस्तावेजों में प्राप्त

---

1. सं. कन्हैयालाल नंदन - 'गगनांचल', त्रैमासिक पत्रिका, पृष्ठ - 2, जून -सितंबर, 1997
2. वही, पृष्ठ - 49, अप्रैल - जून, 1999
3. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत,
4. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

जन्म तिथियों को देखने के पश्चात अब्दुल बिस्मिल्लाह का जन्म 5 जुलाई, 1949 को हुआ परिलक्षित होता है। यही उनकी जन्मतिथि मानना उचित होगा। इनके व्यक्तित्व के विकास में काल एवं स्थान तथा, परिवेश का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, बाल-साहित्य, लोकसाहित्य आदि विधाओं में लेखन किया है। इनकी रचनाओं पर व्यक्तित्व का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

1.1.2 माता - पिता :-

बिस्मिल्लाह जी की माँ का नाम करीमन बी था। वह स्वभाव से सरल और अशिक्षित महिला थी। इनकी माँ संघर्षशील नारी का प्रतिनिधी रूप है। इनके पिता का नाम वलीमुहम्मद था। वे उर्दू, फारसी और अरबी भाषाओं के ज्ञाता थे। घर की परिस्थिती अच्छी होते हुए भी इनके पिताजी शौक से जंगल विभाग में नौकरी करते थे । आगे चलकर जंगल विभाग के अधिकारी से झगड़ा हुआ और उन्होंने नौकरी से इस्तीफा देकर चमड़े का व्यापार शुरू किया। व्यापार में घाटा आ गया और सारा पैसा लेहना में फँस गया। यही से बिस्मिल्लाह जी की गरीबी का प्रारंभ होता है।

1.1.3 परिवार :-

इनका परिवार काफी बड़ा था और अब भी बड़ा ही है। इनके दादा बहुत बड़े जमीनदार थे। प्लेग की बीमारी के कारण उनका देहान्त हुआ। वलीमुहम्मद जमीनदार दादा के पुत्र थे। वलीमुहम्मद के पिताजी ने दो शादियाँ की थीं और वलीमुहम्मद ने चार शादियाँ की थी। बिस्मिल्लाह जी की माँ करीमन बी वलीमुहम्मद की चौथी पत्नी थी। माँ का परिवार बहुत बड़ा था। इनके नाना का देहान्त हुआ था और नानी बूढ़ी थी। मामा गरीब थे और उनके दो बेटे मजदूरी करते थे। उस घर में शहीदन और बेगम नाम की दो लड़कियाँ थीं । शहीदन बड़ी माँ की और बेगम मामू की लड़की थी। नानी ने ही इनको पाला-पोसा था।

कुछ समय बाद दादा की जमीनदारी खत्म हो गयी और बची हुई जायदाद इनके पिताजी के चचेरे भाइयों ने हड़प की। इसके पश्चात बिस्मिल्लाह जी के पिताजी वलीमुहम्मद भिखारी हो गए थे। वे सारी जिम्मेदारी अम्माँ पर थोंपते और अम्माँ को दोषी ठहराते थे। बिस्मिल्लाह जी के अब्बा ने अम्माँ के जेवर रेहन रखकर चमड़े का व्यापार शुरू किया था जिसमें वे असफल रहे। इनका परिवार आज भी बड़ा है। परिवार बड़ा होने के पश्चात भी बिस्मिल्लाह जी स्वयं को अकेला महसूस करते हैं। इसका कारण 12-13 वर्ष की उम्र में ही इनकी माता-पिता का स्वर्गवास हुआ। यहाँ स्वामी राम तीर्थ का कथन दृष्टव्य है - ''In Every little experience of ours folded the whole of History''[1] (हमारे छोटे-से-छोटे अनुभव में मानवता का सारा इतिहास छिपा रहता है।) इनके अकेलेपन की जिंदगी का यही कारण है।

1.1.4 बचपन :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह जी के पिताजी वलीमुहम्मद मण्डला जिले के जंगल विभाग में नौकरी करते थे और माता करीमन बी का गाँव हिनौता उसी जिले में था। वही बिस्मिल्लाह जी का बचपन बीता। इनका बचपन बहुतही दयनीय स्थिती में बीता हुआ परिलक्षित होता है। बचपन में अक्सर प्यार और स्नेह की आवश्यकता होती है लेकिन वे इन बातों से वंचित रहे हैं। पारिवारिक स्नेह के बजाय बचपन में इन्हें अम्माँ और अब्बा की लड़ाइयों को ही देखना पड़ा। कवि सुन्दरलाल कथूरिया कहते हैं - ''सतत संघर्ष जीवन की सफलता का मूल है।''[2] बिस्मिल्लाह जी को बचपन से ही संघर्ष क्या होता है इस बात का एहसास हुआ था। अत: वे उस समय से ही संघर्ष से परिचित हो गए थे। इनकी सफलता का मूल बचपन का संघर्ष ही रहा है। उनके बचपन का सही अनुमान उनकी 'जहरबाद' और 'समर शेष है' कृतियों से लगाया जाता है। निष्कर्ष यह कि इनका बचपन एक संघर्षमयी परिवेश में बीता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

1.1.5 शिक्षा :-

इनकी प्रारंभिक शिक्षा मध्यप्रदेश के मण्डला जिले में स्थित हिनौता नामक गाँव

---

1. सं. अजित कुमार - बच्चन रचनावली, भाग-7, पृष्ठ - 21
2. सं. सुंदरलाल कथूरिया - टेढ़ी मेढ़ी सीढ़ियां, पृष्ठ - 28

में हुई। सौभाग्य से बिस्मिल्लाह जी की शिक्षा ''हिनौता के उस विद्यालय में हुई जो ... पिताजी के प्रयासों से खुला था।''[1] मिडिल तक की शिक्षा दुल्लोपुर (म.प्र.) के मिशन स्कूल में हुई। वे पहले से ही कुशाग्र बुद्धि के छात्र थे। इस बात का पता उनकी रूचियों से हो जाता है - ''पढ़ना, बाजार से कोई चीज जिस कागज में बँधकर आती थी, उस कागज में लिखी इबारत तक को पढ़ा करता था।''[2]

उनकी हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट की शिक्षा उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में स्थित लालगंज नामक कस्बे में हुई। इण्टरमीडिएट के बाद वे आर्थिक विपन्नताओं के कारण नौकरी ढूँढ़ने के प्रयास में जुड़े रहे लेकिन ''प्रिंसिपल साहब एक पिता की भाँति मेरा ख्याल रखते और मेरी हर जरुरत को यथासंभव पूरा करने की कोशिश किया करते थे।''[3] प्रिंसिपल साहब ने इनको आगे की पढ़ाई के लिए प्रेरित किया। इण्टरमीडिएट में कालेज में सबसे अच्छे अंक इन्हें ही मिले थे। बी.ए. की शिक्षा का दाखिला दर्ज करने के लिए इनको अस्सी रूपए के इंतजाम के कारण अम्माँ का भोपाली गजरा बिकना पड़ा और इन्होंने ''बी.ए. की शिक्षा मिर्जापुर शहर में''[4] पूरी की। बिस्मिल्लाह जी ने एम्.ए. एवं डी.फिल. की उपाधियाँ इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हासिल की । निष्कर्षत: स्पष्ट है बिस्मिल्लाह जी उच्च-विद्याविभूषित एवं मेधावी छात्र हैं लेकिन इनका पूरा शैक्षिक जीवन विभिन्न प्रकार की संघर्षमयी स्थितियों में बीता हुआ दृष्टिगत होता है।

1.1.6 नौकरी :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह एक मेधावी छात्र थे। उनका जीवन सतत कर्मशील रहा है। उन्होंने नौटंकी मंडली से लेकर होटल में जूठे बर्तन साफ करने तक की अनेक छिट-पुट नौकरियाँ की हैं। उनके इस संघर्षशील जीवन का फल ही आज का उनका अध्यापकीय जीवन है। बिस्मिल्लाह जी को बचपन से ही अध्यापक के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। इसलिए वे अध्यापक बनना चाहते थे। उन्होंने अध्यापन के प्रति रूचि का कारण इस प्रकार दिया है - ''जब औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को जेल में डाला तो पूछा कि आप कौनसा काम करना पसंद करोगे ?

---

1. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत,
2. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत
3. अब्दुल बिस्मिल्लाह - समर शेष है, पृष्ठ -65
4. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत

जवाब मिला कैदियों को पढ़ाऊँगा। औरंगजेब की प्रतिक्रिया थी : शहंशाही नहीं गई। यानी अध्यापन का अर्थ है 'शहंशाही'।''[1]

बिस्मिल्लाह जी ने प्रारंभ में एक स्कूल में अध्यापन का कार्य किया। उसके बाद ''मित्र प्रकाशन लिमिटेड में 'माया' नामक पत्रिका के उपसंपादक की नौकरी की।''[2] इसके पश्चात इन्होंने ''कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय हनुमना (म.प्र.) में व्याख्याता पद पर केवल 16 दिन नौकरी की।''[3] फिर बनारस के एक इण्टर कॉलेज में दस साल तक लेक्चरर रहे। उनकी लालसा थी कि किसी विश्वविद्यालय में जाकर नौकरी करुँ। उनका यह प्रयास सन् 1984 में सफल हुआ और आज तक वे जामिआ मिल्लिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली में अध्ययन-अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने ''1993 से लेकर 1995 के दौरान वार्सा यूनिवर्सिटी, वार्सा(पोलैण्ड) में विजिटिंग एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में अध्यापन का कार्य किया और वहाँ उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य, साथ ही भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों को लेकर विचार-विमर्श तथा अध्यापन किया।''[4]

1.1.7 विवाह :-

मनुष्य के जीवन में पहले शिक्षा, नौकरी और बाद में छोकरी याने विवाह ऐसा क्रम दृष्टिगत होता है। मैंने बिस्मिल्लाह जी से उनके विवाह के संदर्भ में प्रश्न किया था और जवाब मिला कि उनका विवाह - ''इस्लामी पद्धति से और जब समय आया तब हुआ।''[5] उनका विवाह नौकरी मिलने के पश्चात हुआ दृष्टिगोचर होता है। उनका विवाह उनकी इच्छा के अनुसार हुआ है। बिस्मिल्लाह जी भाग्यवान इसलिए हैं कि उनकी शादी कम उम्र में याने बचपन में नहीं हुई। यदि उनका विवाह माता-पिता की इच्छा के अनुसार होता तो मैं समझता हूँ उन्हें संघर्षशील जीवन का कुछ अलग ही अनुभव आता। वे प्रगतिशील विचारों के होने के कारण उनके विवाह को विशेष महत्त्व प्राप्त होता है।

---

1. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत,
2. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत
3. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत
4. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत
5. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत

1.1.8 मित्र-मंडली :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह का मित्र परिवार काफी बड़ा हैं। ''बनारस में एक दो मित्र परिवार रहे हैं ... उनमें एक अश्फाक साहब हैं।''[1] इनका आज भी उनसे घनिष्ठ संबंध है। उनके दिल्ली में स्थित मित्रों की तो कल्पना ही नहीं कि जा सकती। सब मित्रों मे अश्फाक साहब उनके अच्छे मित्र हैं। इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि इनका मित्र-परिवार बुने हुए जाल की तरह फैला हुआ दृष्टिगोचर होता है। मैं समझता हूँ इनके जाल रूपी मित्र-परिवार का मूल इनमे निहित मित्रता का भाव तथा इनका मानवतावादी दृष्टिकोण रहा है। उनकी मित्रता का परिचय देते हुए चंद्रदेव यादव लिखते हैं - ''मैं 1981 में बिस्मिल्लाह साहब के संपर्क में आया और धीरे-धीरे (यहाँ दिल्ली आकर) मैं उनके परिवार का सदस्य बन गया।''[2] इससे इस कथन को पुष्टि मिलती है कि उनका मित्र-परिवार बड़ा है।

1.1.9 बनारस से दिल्ली आना :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह का बनारस से दिल्ली आना एक महत्त्वपूर्ण प्रयास रहा है। वे पहले बनारस में एक इण्टरमीडिएट कॉलेज में अध्यापक थे। उनकी लालसा तथा आशा-आकांक्षाओं ने उन्हें दिल्ली की ओर आकर्षित किया। उन्होंने लिखा है - ''मैं लगातार प्रयत्न कर रहा था कि किसी विश्वविद्यालय में जाऊँ। मेरा वह प्रयत्न सन् 1984 में सफल हुआ और मैं जामिआ मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली आ गया।''[3] इस कथन से विदित होता है कि भविष्य में हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति आशादायी तथा आकांक्षाओं के साथ जीना जरुरी है।

1.1.10 आंदोलनों में सहभाग :-

बिस्मिल्लाह जी अन्याय तथा शोषण के खिलाफ चलनेवाले आंदोलनों में सहभागी होते थे। उनका अपना कथन दृष्टव्य है -''सन् 1977 में शिक्षा के राष्ट्रीयकरण को लेकर

---

1. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत
2. परिशिष्ट - 2 से उद्धृत
3. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत

एक आंदोलन हुआ था। उन दिनों मैं बनारस (उ.प्र.) के एक कॉलेज में अध्यापक था। चूँकि मैं उत्तर प्रदेश शिक्षक संघ में सक्रिय था, इसलिए आंदोलन में तो भाग लेना ही था।''[1] स्पष्ट है उनका व्यक्तित्व एक आंदोलन कर्ता के रुप में भी दृष्टिगोचर होता है।

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ -

अब्दुल बिस्मिल्लाह के बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व के पक्ष पर यहाँ संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है -

1.2.1 रहन-सहन :-

बिस्मिल्लाह जी के स्नेही एवं सहपाठी अध्यापक डॉ. चंद्रदेव यादव जी के अनुसार - ''बिस्मिल्लाह साहब अब अक्सर कुर्ते-पाजामे में नजर आते हैं। सर्दियों में वे सूट पहनते हैं।''[2] ''5' 8" या 9" के बिस्मिल्लाह साहब छरहरे बदन के व्यक्ति हैं। पहले हल्की पतली मूछों में, लेकिन अब क्लीन शेव वाले उनके चेहरे पर सुतवाँ लंबी नाक और घनी काली भौंहों के नीचे पतीली और सपनीली आँखों में धर्म-दर्शन और साहित्य की त्रिणेणी नातिवेग से बहती रहती है। बिस्मिल्लाह साहब धार्मिक नहीं है। पहले वे रोजा नमाज का पालन करते थे, लेकिन अब वे ईद-बकरीद के अलावा नमाज नहीं पढते। उन्होंने दुनिया के प्रमुख सभी धर्मग्रंथों का पारायण किया है और इसलिए वे उनकी बारीकियों से परिचित है ।''[3] स्पष्ट है कि उनके व्यक्तित्व का बाहय पक्ष प्रभावशाली एवं आकर्षक, हँसमुख, धीर-गंभीर रहा हुआ परिलक्षित होता है।

1.2.2 मेधावी छात्र :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह जी को बचपन से ही पढ़ाई में विशेष रूचि थी। वे अनेक संघर्षमयी एवं त्रासद स्थितियों में पढ़ाई करते थे। उनकी शुरु से ही पढ़ाई में अलग पहचान थी।

---

1. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत
2. परिशिष्ट - 2 से उद्धृत
3. परिशिष्ट - 2 से उद्धृत

इनके पढ़ाई का आरंभ अनपेक्षित और नाटकीय ढंग से शुरु हुआ था। बवंडरों के समान विभिन्न कठिन शर्तों का सामना करके इन्होंने पढ़ाई की और इंटर में सबसे अधिक अंक प्राप्त किए। उनमें मेधावी छात्र के सभी गुण विद्यमान थे। इसीलिए ही प्रिंसिपल साहब पिता की भाँति उनका ख्याल रखते थे। कहा जाता है, जिसका कोई नहीं होता उसका खुदा या ईश्वर होता है। ठीक इस उक्ति के समान प्रिंसिपलसाहब उनके लिए साक्षात भगवान के समान दृष्टिगोचर होते हैं। अब्दुल बिस्मिल्लाह छात्र जीवन में खातून और छाया के शिक्षक भी थे। निष्कर्षत: स्पष्ट है एक कुशाग्र और विनम्र छात्र के रूप में उन्होंने छात्र जीवन में ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया।

1.2.3 कर्मशील जीवन :-

बिस्मिल्लाह जी की कृति 'समर शेष है' के अध्ययन के पश्चात हम उनके कर्मशील जीवन का अंदाजा लगा सकते हैं। मैंने उनके अपनी सभी रचनाओं में प्रिय रचना के संदर्भ में प्रश्न किया था तो उन्होंने जवाब में कहा - ''मुझे 'समर शेष है' बहुत प्रिय है। शायद इसलिए कि वह उपन्यास नहीं, एक जीवन है, जो आज अविश्वसनीय लगता है।''[1] उनका यह कथन सही है। यह उपन्याय वास्तव में मुझे ही अविश्वसनीय लग रहा था लेकिन उनसे प्राप्त प्रश्न का उत्तर पढ़कर मुझे विश्वास हुआ।

उनके कर्मशील जीवन का रणक्षेत्र बलापुर, लालगंज, भोपतपुर, उभारी, मिर्जापुर और इलाहाबाद रहा है। मेरे जैसे सामान्य पाठकों को प्रश्न पड़ता है कि उन्होंने कौनसा कर्म नहीं किया है? इन्होंने होटल में जूठे बर्तन माँजने से लेकर के टट्टी भरी फलिया साफ करना, बीड़ी बनाना, बकरियाँ चराना, हड्डियाँ इकठ्ठा करना, नौटंकी में काम करना, साईकिलों की मरम्मत करना, जालियाँ बनाने के कारखाने में और सरकार से खुलवाए गए टेस्टवर्क में सिंचाई योजना के तहत तालाब खुदवाने से लेकर सड़क बनाने तक के काम किए हैं। निष्कर्षत : स्पष्ट है उन्होंने अपने जीवन में विभिन्न अनुभव पाए हैं। अत: वे लेखक ही नहीं बल्कि एक सामान्य मजदूर के रूप में भी दृष्टिगोचर होते हैं।

---

1. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत

1.2.4 अध्ययनशील :-

भिन्न - भिन्न संघर्षरूपी पर्वतों से टकराते हुए इनकी अध्ययन यात्रा आज तक निरंतर दृष्टिगत होती है। डॉ. चंद्रदेव यादव कहते हैं - ''अंतरर्राष्ट्रीय ख्याति के अब्दुल बिस्मिल्लाह अपने प्रशंसकों से घिरे रहते हैं। उनके घर पर शाम को अक्सर साहित्य प्रेमियों की बैठकें होती हैं।... उनकी वक्तृता लाजवाब है।''[1] इससे स्पष्ट होता है कि उन्होंने अनेक कठिनाइयों से समय निकालकर शिक्षा प्राप्त की है। यही उनकी अध्ययनशीलता की उपलब्धि है जो हम नवयुवकों के लिए एक आदर्श और चुनौती है। अब्दुल बिस्मिल्लाह ''रचनाकार या चिंतक ही नहीं, मनुष्य होने के साथ-साथ एक चतुर और बौद्धिक बनारसी भी हैं। उनकी बुद्धि तार्किकता और युक्तियों का लोग लोहा मानते हैं। वे एक कुशल रणनीतिकार हैं।''[2] उनकी रचना 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में लिखित 'क्षेपक' को पढ़ने पर उनकी अध्ययनशील वृत्ति दृष्टिगोचर होती है।

1.2.5 स्वाभिमानी :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह में स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने जीवन में आज तक स्वाभिमान को सुरक्षित रखा है। स्वाभिमान ही व्यक्ति की वास्तविक पहचान है। बिस्मिल्लाह जी के भाई और भाभी उन्हें और उनके अब्बा को घर में रखने के लिए तैयार नहीं थे। तब इन बाप बेटों के सामने एक सवाल खड़ा हुआ था। बलापुर से जाते तो पढ़ाई नष्ट होती और रहते तो स्वाभिमान की हत्या होती। उन्होंने स्वाभिमान और पढ़ाई दोनों को महत्त्व दिया हुआ परिलक्षित होता है। टेस्टवर्क में उन्होंने ओवरसियर साहब से अपनी मजूरी की माँग की तो उन्होंने अँगूठा लगाकर मजूरी लेने के लिए कहा लेकिन बिस्मिल्लाह जी चाहते थे कि जेब से कलम निकालकर दस्तखत करके मजूरी प्राप्त करूँ। क्योंकि वे भी पढ़े-लिखे थे। लेकिन उस समय सवाल मजदूरी और दयनीय जिंदगी का था। इसलिए उन्होंने अँगूठा लगवाकर मजदूरी प्राप्त की। निष्कर्षत: स्पष्ट है उनमें स्वाभिमानी प्रवृत्ति प्रस्फुटित होती है।

---

1. परिशिष्ट - 2 से उद्धृत
2. परिशिष्ट - 2 से उद्धृत

1.2.6 भावुक :-

बिस्मिल्लाह जी के व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं में भावुकता एक महत्त्वपूर्ण है। डॉ. चंद्रदेव यादव लिखते हैं - ''उनका भावुक, किन्तु आशावादी रूप उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है।''[1] यादव जी और आगे कहते हैं - बिस्मिल्लाह साहब अत्यन्त भावुक हैं। उनकी यह भावुकता कब उजागर हो जाएगी, कुछ कहा नहीं जा सकता। मैं उन्हें अमृतलाल नागर की मृत्यू पर रोते हुए देख चुका हूँ। अपने प्रिय और आत्मीय जनों के निधन पर ही नहीं, दूसरे अन्य प्रसंगो में भी मैंने उन्हें रोते हुए देखा है। ... अपनी कविता 'घर की चिट्टी' का पाठ करते हुए वे अपने को रोक नहीं पाते और रो पड़ते हैं।''[2] यह कविता एक निरीह ग्रामीण औरत की पीड़ा और बेबसी की पृष्ठभूमि पर आधारित है। जब मैंने उनको प्रश्नावली भेजी, तो उन्होंने प्रश्नावली के उत्तर भेजने के लिए बार-बार टाल दिया। मैं समझता हूँ प्रश्नावली के उत्तर न भेजने के पीछे भावुकता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। क्योंकि उन्होंने बहुतही दयनीय जिंदगी का सामना किया है। अत: वे पुन: उन यादों को उजागर नहीं करना चाहते हैं। किंतु मेरे बार-बार के आग्रह को वे टाल नहीं सके। अत: उन्होंने प्रश्नों के उत्तर तो भेज दिए। लेकिन उनका संघर्षमय जीवन ही उनके भावुक व्यक्तित्व का परिचायक है।

1.2.7 संवदेनशील :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एक कवि-कथाकार का संवदेनशील व्यक्तित्व है। उनके संवदेनशील व्यक्तित्व का परिचय उनकी अनेक कृतियों से होता है। उन्होंने उपनी रचनाओं में हिंदू-मुस्लिम तथा अन्य जातियों का चित्रण किया है। उनकी रचनाओं को पढ़ने के उपरान्त हम अनुभव करते हैं कि उन्होंने हिंदू-मुस्लिम समाज में प्रचलित रूढ़ि तथा कुप्रथाओं को भी बड़ी सजगता से ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया है। इन सारी बातों से उनके संवदेनशील मन तथा व्यक्तित्व का परिचय तुरन्त हो जाता है।

---

1. परिशिष्ट - 2 से उद्धृत
2. परिशिष्ट - 2 से उद्धृत

1.2.8 संघर्ष की जिंदगी :-

संघर्ष की जिंदगी उनके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। गोपालप्रसाद व्यास ने लिखा है - ''जो वेदना को पी सकता है, वही हँस सकता है। जो जीवन के प्रति, उसके मूल्यों के प्रति गंभीर है, वही व्यवहार में हल्का-फुल्का हो सकता है।''[1] बिस्मिल्लाह जी का जीवन भी अनेक त्रासद स्थितियों में गुजरा हुआ परिलक्षित होता है। तेरह-चौदह वर्षों की उम्र में ही उनके माता-पिता का स्वर्गवास हुआ। तत्पश्चात उनकी संघर्ष की जिंदगी आरंभ हुई। रघुवीर सहाय ने मनुष्य की जिंदगी के संदर्भ में कहा है - ''मानव जीवन एक पहेली है, और उससे भी अधिक अनबुझ वस्तु है विधि का विधान। मनुष्य जीवन के साथ खेलता है।''[2] बिस्मिल्लाह जी का जीवन एक पहेली के रूप में प्रस्फुटित हुआ है। कुल मिलाकर उनका संघर्षमयी जीवन एक गेंदरूपी खेल बनकर रहा है। सुमित्रानंदन पंत जिसे जीवन कहते है उसका बिस्मिल्लाह जी ने अनुभव किया है। पंत की पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं - ''वय: संधि की ओर खडा था संघर्षों का पर्वत यौवन अथवा एकाकीपन का अंधकार दु:सह है इसका मूक भार, इसके विषाद का रे न पार।''[3] स्वामी विवेकानंद ने युरोप यात्रा के समय अपनी दैनिकी में लिखा है - ''जीवन एक संग्राम आहे, देह दुर्बल झाला आहे, खरा पण उत्साहाला अंत नाही।''[4] (जीवन एक संग्राम है, देह दुर्बल बनने के पश्चात भी उसमें असीम तेज है।) बिस्मिल्लाह जी की जिंदगी अंत तक एक संग्राम बनकर रही। अपार संघर्षों से जूझते हुए उन्होंने उत्साह को आज तक पल्लवित रखा।

1.2.9 प्रगतिशील एवं मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह के व्यक्तित्व पर प्रगतिशील एवं मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इनकी रचनाओं से उनके प्रगतिशील एवं मार्क्सवादी विचारधारा का पता चलता है। उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा है - ''जिन दिनों काशीनाथ सिंह कहानियाँ लिख रहे थे उस समय नक्सल मूवमेंट बहुत तेज था ... काशीनाथ सिंह ने जबलपुर का अधिवेशन देखा ... लोगों से बातचीत की, फिर ... आकर उसकी चर्चा कि अब यह आंदोलन तीव्रता के

---

1. सं. कौशल्या अश्क - अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व, पृष्ठ - 163
2. सं. सुरेश कुमार - आधुनिक निबंध संग्रह, पृष्ठ - 49
3. सुमित्रानंदन पंत - साठ वर्ष और अन्य निबंध, पृष्ठ - 28
4. सतेंद्रनाथ मुजुमदार - स्वामी विवेकानंद यांचे चरित्र, पृष्ठ - 283
(स्वामी विवेकानंद का चरित्र)

साथ सक्रिय होने जा रहा है। इससे हम लोगों को जुड़ना चाहिए। हम लोगों ने इस पर विचार-विमर्श किया और उसी समय से मैं सक्रिय रूप से जुड़ा तब से आज तक जुड़ा हूँ और काम कर रहा हूँ।''[1] उनके इस वक्तव्य से उनकी विभिन्न रचनाओं में निहित अभिव्यक्ति से उनके प्रगतिशील एवं मार्क्सवादी विचारों को जाना जा सकता है।

1.2.10 युवकों के प्रेरणा स्रोत :-

बिस्मिल्लाह जी का व्यक्तित्व युवकों के लिए प्रेरणादायी है। वे बचपन से युवकों के प्रेरणा-स्रोत इस अर्थ में है कि उन्होंने बचपन तथा युवावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक विभिन्न कठिनाइयों, परेशानियों और संघर्षों को बड़े उत्साह के साथ झेला, भोगा है। नवयुवकों के लिए यह एक आदर्श स्थापित करनेवाला प्रतीत होता है उनके व्यक्तित्व का प्रभाव निश्चितही नवयुवकों के मानसपटल पर पड़े बिना नहीं रह सकता।

1.2.11 बुनकरों के प्रति आस्थावान :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह के मन में बुनकर समाज के प्रति प्रेमभाव तथा आस्था कूट-कूट कर भरी हुई परिलक्षित होती है। बनारस तथा उसके आसपास के परिवेश ने उन्हें मजदूर बुनकरों के प्रति आकर्षित किया । गिरसों से होनेवाले शोषण को उन्होंने न्याय दिया और मजदूर बुनकरों को उनके अधिकारों से परिचित किया। यही उनकी प्रगतिशील एवं मार्क्सवादी विचारधारा को शोषितों के प्रति पहचान थी। स्पष्ट है उसमें बनारस के शोषित बुनकरों के प्रति आस्था का भाव पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगत होता है।

1.2.11 संपादक एवं संस्थापक :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह सिर्फ लेखक, साहित्यिक ही नहीं बल्कि उपसंपादक, संस्थापक भी थे। स्वयं उन्होंने कहा है कि वे - ''मित्र प्रकाशन लिमिटेड में 'माया' नामक पत्रिका के उपसंपादक''[2] के रुप में कार्यरत थे। बिस्मिल्लाह जी उपसंपादक के साथ-साथ

---

1. सं. चंद्रदेव यादव - समकालीन कथा-साहित्य का एक रुक्न, पृष्ठ - 154
2. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत

'कदम' पत्रिका के संस्थापक रहे हैं। यह पत्रिका ''अब्दुल बिस्मिल्लाह ने और कामरेड उत्तमचंद ने मिलकर निकाली थी। अब इसे मऊनाथ भंजन (उ.प्र.) से डॉ. जयप्रकाश 'धूमकेतु' निकाल रहे हैं।''[1] इस पत्रिका से और 'माया' पत्रिका से अब्दुल बिस्मिल्लाह के संपादकीय व्यक्तित्व का पहलू दृष्टिगोचर होता है।

1.3 कृतित्व अर्थात अब्दुल बिस्मिल्लाह की साहित्य-यात्रा -

हिंदी के सशक्त उद्‌गायक एवं कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह का कृतित्व बहुआयामी रहा है। उन्होंने विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य किया है। औपन्यासिक कृतियों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. उषा यादव लिखती हैं - ''महत्त्व उन्हीं औपन्यासिक कृतियों का रहेगा, जिनमें धरती से जुड़ाव, मूल्य-बोध एवं आदमी को संघर्षशीलता व जिजीविषा देने की शक्ती होगी।''[2] बिस्मिल्लाह जी की रचनाएँ ठीक इसी कोटि में उतरती है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, बाल-साहित्य, लोक-साहित्य आदि विधाओं में कलम चलायी है। महादेवी वर्मा ने साहित्य लेखन की प्रेरणा के संदर्भ में कहा है - ''प्रेरणा कहीं बाहर खोजने नहीं जाना पडता; वस्तुत: हर संवेदनशील लेखक को, कवि को कलाकार को और ... सामान्य जन को अपने परिवेश से ही मिलती है।''[3] अब्दुल बिस्मिल्लाह भी एक संवेदनशील कवि, कथाकार हैं। उन्हें साहित्य लेखन की जो प्रेरणा मिली वह वहाँ के परिवेश से ही कि जहाँ वे शैक्षिक जीवन में रहा करते थे । उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का आरंभ ''शायद अभाव से, शायद प्रेम से, शायद जीवन के अनुभवों से''[4] माना है। कहना यही होगा कि उन्हें मसिजीवी बनाने के लिए वहाँ का परिवेश अहंम भूमिका निभाता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह संघर्ष के उद्‌गाता-कथाकार, मार्क्सवादी, क्रांतिकारी और युग-प्रवर्तक रचनाकार हैं। सुखनवर निराला ने संघर्षमय जीवन का अनुभव करने के उपरान्त लिखा है - ''दुख ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ आज जो नहीं कहीं।''[5] इस कथन के अनुसार बिस्मिल्लाह का जीवन, चिंतन और कार्य मानव अधिकारों के लिए संघर्ष का खुला दस्तावेज है जिससे अनेक युवा संघर्ष के लिए प्रोत्साहित होते हैं। डॉ. बांदिवडेकर जी लिखते हैं

---

1. परिशिष्ट - 2 से उद्‌धृत
2. डॉ. उषा यादव - हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, पृष्ठ - 19
3. डॉ. रणवीर रांग्रा - भारतीय लेखिकाओं से साक्षात्कार, पृष्ठ - 15
4. परिशिष्ट - 1 से उद्‌धृत
5. रामविलास शर्मा - निराला, पृष्ठ - 22

- ''जिस तरह समाज में हर व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व कुल मिलाकर समृद्धि लाता है, उसी प्रकार हर रचना का अपना रंग, रूप अपना रस होता है।''[1] अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ठीक इसी ढाँचे में ढलता हुआ दृष्टिगोचर होता है। उनके व्यक्तित्व का महत्त्व जितना है उससे अधिक महत्त्व उनकी रचनाओं का हैं और हिंदी साहित्य जगत में उन रचनाओं की अपनी अलग पहचान है। बिस्मिल्लाह जी का कृतित्व एक लब्धप्रतिष्ठ एवं गंभीर साहित्यकर्मी का है। वे लिखते हैं - ''मैं जल्दबाजी में कोई काम नहीं करता । फिर उपन्यास लिखना कोई खेल नहीं है । जब तक अनुभव विस्तार एवं गहराई न हो, अच्छा उपन्यास नहीं लिखा जा सकता। जो लोग जल्दी-जल्दी उपन्यास लिखते हैं वे मात्र खिलवाड़ करते हैं।''[2] इससे उनके गंभीर एवं संवेदनशील कृतित्व का अनुमान लगाया जा सकता है। संक्षेप में अब्दुल बिस्मिल्लाह की आज तक की साहित्य यात्रा इस प्रकार रही है -

1.3.1 उपन्यास साहित्य :-

1.	समर शेष है	- राजकमल प्रकाशन,	प्रथम संस्करण, 1984
2.	झीनी-झीनी बीनी चदरिया	- राजकमल प्रकाशन,	प्रथम संस्करण, 1986
3.	जहरबाद	- राजकमल प्रकाशन,	प्रथम संस्करण, 1987 (लेखन क्रम की दृष्टि से पहला)
4.	दंतकथा	- राजकमल प्रकाशन,	प्रथम संस्करण, 1990
5.	मुखड़ा क्या देखे	- राजकमल प्रकाशन,	प्रथम संस्करण, 1996

1.3.2 कहानी - संग्रह :-

1.	टूटा हुआ पंख	- आलेख प्रकाशन, दिल्ली (अनुपलब्ध)	प्रथम संस्करण, 1981
2.	कितने-कितने सवाल	- पराग प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1984

---

1. डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर - उपन्यास : स्थिति और गति, पृष्ठ - 26
2. परिशिष्ट - 1 से उद्धृत

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

3.	रैन बसेरा	- वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1989
4.	अतिथि देवो भव	- राजकमल प्रकाशन,	प्रथम संस्करण, 1990
5.	जीनिया के फूल	- प्रेम प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1991
6.	रफ-रफ मेल	- राजकमल प्रकाशन,	प्रथम संस्करण, 2000
7.	अब्दुल बिस्मिल्लाह की विशिष्ट कहानियाँ	- -	प्रथम संस्करण, 1985

1.3.3 बाल साहित्य :-

1.	अजगर का पेट कहानियाँ	- -	प्रथम संस्करण, 1989

1.3.4 नाटक :-

1. दो पैसे की जन्नत - - -
   (दिल्ली, लखनऊ, इलाहाबाद, गोरखपुर, भिलाई, भोपाल आदि स्थानों से मंचित)
2. कलियुग का रथ - - -

1.3.5 कविता-संग्रह :-

1.	मुझे बोलने दो	- युगबोध प्रकाशन, वाराणसी - 2	प्रथम संस्करण, 1977
2.	छोटे बुतों का बयान	- संभावना प्रकाशन, हापुड(उ.प्र.)	प्रथम संस्करण, 1982
3.	वली मुहम्मद और करीमन बी की कविताएँ	- पराग प्रकाशन, विश्वास नगर, दिल्ली	प्रथम संस्करण, 1989,
4.	किससे हाथ गुलेल(दोहे)	- अनुपलब्ध,	प्रथम संस्करण, 1990

1.3.6 लोक-साहित्य :-

1. लोक काव्य-विधा 'कजरी' - अनंग प्रकाशन, दिल्ली 110 053 प्रथम संस्करण, 2000

1.3.7 आलोचना-पुस्तक :-

1. अल्पविराम - अनुपलब्ध -
2. मध्यकालीन हिंदी काव्य में सांस्कृतिक समन्वय (शोध प्रबंध) - हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद - हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रथम संस्करण, 1985

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान -

अब्दुल बिस्मिल्लाह एक सशक्त कथाकार हैं। उनके सशक्त कृतित्व का परिचय उनको मिले पुरस्कार एवं मान-सम्मानों से दृष्टिगोचर होता है। अब तक अब्दुल बिस्मिल्लाह निम्नांकित पुरस्कार एवं मान सम्मानों से विभूषित हैं -

1.4.1 उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार :-

1. सन 1977 में अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'मुझे बोलने दो' (कविता संग्रह) को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह का कहानी संग्रह 'रैन बसेरा' को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के 'यशपाल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

1.4.2 सोवियत लैण्ड नेहरु पुरस्कार :-

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह का बहुचर्चित उपन्यास 'झीन झीनी बीनी चदरिया' को सोवियत लैण्ड नेहरु पुरस्कार सन 1987 में प्राप्त हुआ।

1.4.3 मध्यप्रदेश का केडिया पुरस्कार :-

1. सन 1987 में अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' उपन्यास को केडिया पुरस्कार मिला।

1.4.4 दिल्ली हिंदी अकादमी पुरस्कार :-

1. सन 1981 में अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'वली मुहम्मद और करीमन बी की कविताएँ' इस काव्य-संग्रह को दिल्ली हिंदी अकादमी से पुरस्कृत किया गया।

1.4.5 मध्यप्रदेश साहित्य परिषद पुरस्कार :-

''सन 2001 को अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास को मध्यप्रदेश साहित्य परिषद का 'वीर सिंह देव' पुरस्कार मिला है।''[1]

निष्कर्ष -

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विवेचन-विश्लेषण के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उनका व्यक्तित्व प्रगतिशील, गंभीर, अध्ययनशील है और मनुष्य को यथार्थ एवं आदर्श की ओर आकर्षित करनेवाला है, जो विभिन्न बवंडर, तूफान, संकट आदि कठिनाइयों का संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता हुआ दृष्टिगोचर होता है।
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह को बचपन में माता-पिता तथा परिवार से प्यार नहीं मिला क्योंकि उनके माता-पिता बचपन के समय ही इस दुनिया से स्वर्ग की ओर चल पडे थे। इसलिए उनको विभिन्न प्रकार के संघर्ष को झेलना पड़ा।
3. संघर्षमय स्थिति में भी उन्होंने पढ़ाई जारी रखी इसलिए ही वे मेधावी छात्र, स्वाभिमानी, संवदेनशील, भावुक तथा युवकों के प्रेरणा स्रोत बनें।

---

1. परिशिष्ट - 3(ई) से उद्धृत

4. अब्दुल बिस्मिल्लाह के पास प्रगतिशील एवं मार्क्सवादी विचार होने के कारण उनका साहित्य मानवतावादी रहा है। उन्होंने सर्वहारा वर्ग को लक्ष्य करके शोषितों के पक्ष में शोषकों के खिलाफ आवाज उठायी।

5. अब्दुल बिस्मिल्लाह हिंदू तथा मुस्लिम समाज में प्रचलित कुप्रथाओं एवं रुढ़ियों को यथार्थता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने अनेक विधाओं में अपनी प्रभावशाली कलम चलायी है जो अमिट छाप छोड़नेवाली परिलक्षित होती है।

6. अंतत: बिस्मिल्लाहजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी दृष्टिगोचर होता है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि बिस्मिल्लाह जी का व्यक्तित्व एक आदर्श के रूप में और कृतित्व चेतनादायी तथा संघर्षशील परिलक्षित होता है, जो पाठकों को सोच-विचार करने के लिए बाध्य करता है।

❑❑❑